प्रेरणा अन्य फसलों की अपेक्षा कई गुना मिला मुनाफा, तीन वर्षों से दो सौ कुतल अनार का बबलू कर रहे उत्पादन

अनार की खेती बनी उन्नति का जरिया

संवाद सूत्र, प्रेमनगर : प्रकृति की मार से बर्बाद हो रहे किसान के सामने अनार की खेती आर्थिक उन्नति का जरिया बनी। अनार की खेती से किसान को पांच वर्ष बाद जो आमदनी शुरू हुई, वह अन्य फसलों की अपेक्षा कई गुना अधिक मिली।

ऐरायां ब्लाक के रसूलपुर भंडरा मजरे बैसन का पुरवा गांव निवासी बबलू सिंह ने पारंपरिक खेती के साथ ही अनार की खेती को आर्थिक उन्नति का आधार बनाया। बकौल बबलू ने बताया कि इस खेती की सीख उन्हें कृषि विज्ञान केंद्र, थरियांव के प्रभारी आरके सिंह से मिली। पांच वर्षों में तैयार होने वाली फसल से मुनाफा देखकर दूसरे किसान भी इससे प्रेरित हो रहे हैं। बताया कि अनार की खेती के अलावा वह लेमनग्रास व पामारोजा की खेती भी करते हैं। पारंपरिक खेती में लगातार नुकसान की वजह से उन्होने गंगा कटरी इलाके में अनार की खेती को आर्थिक उन्नति का जरिया बनाया। बताया कि मिट्टी व भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए मृदुला किस्म का अनार उगाया गया। जैविक खेती से उत्पादित अनार की स्थानीय बाजार व दूसरे शहरों में मांग होती है। बताया कि उन्होंने सात बीघा क्षेत्रफल में अनार की खेती की है। प्रति वर्ष सात-आठ लाख रुपये अनार की खेती से आमदनी लेते हैं।

- यमुना तटवर्ती गांव में किसान ने संवारी आर्थिक स्थिति
- ग्राम सभा व आसपास के किसान हुए प्रेरित

रसूलपुर भंडरा मजरेबैसन का पुरवा में अनार की खेती दिखाते किसान बबलू सिंह● जागरण

ऐसे तैयार होती है अनार की खेती

एक बीघे खेती में अनार की फसल तैयार करने के लिए सबसे पहले तीन गुना तीन फिट का आधार बनाया जाता है। एक बीघे में 170 पौधे लगाने का मानक है। पौध के नीचे जगह होने के कारण अनार के साथ पामा रोजा व लेमन ग्रास की फसल भी तैयार हो जाती है। बबलू सिंह ने बताया कि एक पौधे में 180-200 तक फल लगते हैं। बताया कि पांच साल बाद से उत्पादित होने वाला अनार 24 वर्षों तक रहता है। बंजर भूमि में भी अनार की खेती की जा सकती है। अच्छी उपज के लिए खेत की मिट्टी सबसे महत्वपूर्ण होती है। उपजाऊ जमीन के साथ ही अनार का उत्पादन बंजर भूमि पर लिया जाता है।

किसान के गांव जाकर फसलों की वीडियो बनाकर भेजा जाएगा। यदि शासन से कोई लाभ मिलेगा तो उसे मुहैया कराया जाएगा।

आरएस यादव, जिला उद्यान अधिकारी

सोलापुर अनुसंधान संस्थान में लिया प्रशिक्षण : बबलू सिंह ने बताया कि अनार की खेती में किन-किन चीजों का ध्यान रखा जाता है, इसके बारे में उन्होंने अनार अनुसंधान संस्थान, सोलापुर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। संस्थान की डायरेक्टर ज्योत्सना जी ने 15 दिवसीय प्रशिक्षण में अनार की विभिन्न प्रजातियों व खेती के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी। अनार की टीशू कल्चर प्रजाति के लिए वैज्ञानिक नृपेंद्र विक्रम सिंह का पूरा सहयोग लिया। किसान का कहना था कि विगत तीन वर्षों से वह 200 कुंतल अनार का उत्पादन ले रहे हैं।